

जेडीयू का बड़ा एक्शन, अनंत सिंह और पत्नी नीलम देवी छह साल के लिए निष्कासित

विधान परिषद चुनाव में पार्टी उम्मीदवार के खिलाफ प्रचार करने पर कार्रवाई, मोकामा विधायक की सदस्यता खत्म कराने के लिए विधानसभा अध्यक्ष से सिफारिश करने की तैयारी

पटना। बिहार की राजनीति में विधान परिषद चुनाव के दौरान सामने आई बगावत के बाद जनता दल (यूनाइटेड) ने मोकामा के विधायक अनंत सिंह और उनकी पत्नी नीलम देवी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पार्टी ने दोनों की प्राथमिक सदस्यता तत्काल प्रभाव से समाप्त करते हुए छह साल के लिए निष्कासित कर दिया है। जेडीयू ने अनंत सिंह के खिलाफ आगे की कार्रवाई के संकेत देते हुए उनकी विधानसभा सदस्यता समाप्त कराने के लिए विधानसभा अध्यक्ष प्रेम कुमार से सिफारिश करने की बात भी कही है। पार्टी की इस कार्रवाई को विधान परिषद चुनाव में उसके उम्मीदवार के खिलाफ प्रचार और नेतृत्व के निर्देशों की कथित अवहेलना से जोड़कर देखा जा रहा है। इस घटनाक्रम ने बिहार की सियासत में राजनीतिक अनुशासन, पार्टी नेतृत्व के अधिकार और चुनाव के दौरान बगावत के मुद्दे को फिर चर्चा में ला दिया है।

जेडीयू की ओर से की गई कार्रवाई के पीछे पार्टी विरोधी गतिविधियों को प्रमुख वजह बताया गया है। पार्टी का आरोप है कि अनंत सिंह और नीलम

देवी ने संगठन के निर्देशों का बार-बार उल्लंघन किया। इसके अलावा शीर्ष नेतृत्व के खिलाफ अनुचित भाषा का इस्तेमाल करने और विधान परिषद चुनाव में पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार के बजाय दूसरी पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन में प्रचार करने को भी अनुशासनहीनता माना गया। जेडीयू के मुताबिक, पार्टी के उम्मीदवार के खिलाफ किसी अन्य प्रत्याशी का समर्थन संगठनात्मक अनुशासन के विपरीत है। इसी आधार पर दोनों नेताओं की प्राथमिक सदस्यता समाप्त कर उन्हें छह साल के लिए पार्टी से बाहर करने का फैसला लिया गया। विधान परिषद चुनाव के दौरान अनंत सिंह का रुख जेडीयू के लिए असहज स्थिति पैदा करने वाला रहा। बताया गया कि उन्होंने जन सुराज पार्टी के उम्मीदवार अनुज सिंह का समर्थन किया था। यह समर्थन पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार नीरज कुमार के खिलाफ माना गया। चुनाव में जब पार्टी अपने प्रत्याशी के पक्ष में समर्थन जुटाने में लगी थी, उसी समय अनंत सिंह की ओर से दूररे उम्मीदवार के पक्ष में प्रचार करने से राजनीतिक



विवाद बढ़ गया। पार्टी नेतृत्व ने इसे केवल व्यक्तिगत राजनीतिक पसंद का मामला नहीं, बल्कि संगठन के निर्देशों की अवहेलना के रूप में देखा। 23 अक्टूबर को मतदान के दिन भी अनंत सिंह ने सार्वजनिक रूप से आई और उन्होंने पार्टी नेतृत्व तथा अपने समर्थक छोटे सिंह की गिरफ्तारी

को लेकर जेडीयू और पार्टी उम्मीदवार नीरज कुमार पर निशाना साधा था। अनंत सिंह ने आरोप लगाया था कि उनके समर्थक के खिलाफ अत्याचार हुआ है। इस मामले को लेकर उनकी नाराजगी मतदान के दिन भी सामने आई और उन्होंने पार्टी नेतृत्व तथा उम्मीदवार पर सवाल उठाए। उनके

बयान ने चुनावी माहौल में तनाव को और बढ़ा दिया। अनंत सिंह ने यह भी कहा था कि वह पहले भी नीरज कुमार और ललन सिंह का विरोध कर चुके हैं, लेकिन उस समय पार्टी की ओर से उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई थी। उनके इस बयान से यह संकेत मिला कि पार्टी

के कुछ नेताओं के साथ उनके मतभेद पहले से चले आ रहे थे। हालांकि, मौजूदा कार्रवाई का औपचारिक आधार जेडीयू ने पार्टी विरोधी गतिविधियों, नेतृत्व के खिलाफ बयानबाजी और विधान परिषद चुनाव में आधिकारिक उम्मीदवार के विरुद्ध प्रचार को बताया है।

अनंत सिंह बिहार की राजनीति में लंबे समय से चर्चित चेहरा रहे हैं। मोकामा क्षेत्र में उनकी राजनीतिक सक्रियता और स्थानीय प्रभाव के कारण उनके बयानों तथा फैसलों पर राजनीतिक हलकों की नजर रहती है। ऐसे में जेडीयू से उनका निष्कासन केवल संगठनात्मक कार्रवाई नहीं, बल्कि राज्य की राजनीति में भी महत्वपूर्ण घटनाक्रम माना जा रहा है। उनकी पत्नी नीलम देवी के खिलाफ भी समान कार्रवाई किए जाने से इस विवाद का दायरा और बढ़ गया है। पार्टी ने दोनों की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करने और छह साल तक संगठन से बाहर रखने का निर्णय लिया है।

इस घटनाक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू अनंत सिंह की विधानसभा सदस्यता को लेकर जेडीयू की ओर से दिया

गया संकेत है। पार्टी ने कहा है कि वह उन्हें विधायक पद से अयोग्य घोषित कराने के लिए विधानसभा अध्यक्ष प्रेम कुमार से सिफारिश करेगी। हालांकि, पार्टी से निष्कासन और विधानसभा की सदस्यता समाप्त होना अलग-अलग प्रक्रियाएं हैं। केवल पार्टी से निकाले जाने भर से विधायक की सदस्यता अपने आप समाप्त नहीं होती। इस संबंध में अंतिम निर्णय संबंधित संवैधानिक और विधायी प्रावधानों के तहत सक्षम प्राधिकारी को लेना होगा। इसलिए अनंत सिंह की विधानसभा सदस्यता को लेकर आगे की स्थिति प्रस्तावित कार्रवाई और संबंधित प्रक्रिया पर निर्भर करेगी। राजनीतिक दल अपने सदस्यों से अपेक्षा करते हैं कि वे चुनाव के दौरान पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार और संगठन के निर्णयों का समर्थन करें। जब कोई विधायक या वरिष्ठ नेता सार्वजनिक रूप से पार्टी के उम्मीदवार के खिलाफ खड़ा होता है, तो इससे संगठन की चुनावी रणनीति और नेतृत्व के अधिकार पर सवाल उठते हैं। जेडीयू ने अनंत सिंह और नीलम देवी के मामले में इसी अनुशासनात्मक

पहलू को आधार बनाकर कार्रवाई की है। दूसरी ओर, अनंत सिंह ने मतदान के दिन अपने समर्थक की गिरफ्तारी और पार्टी नेताओं के रवैये को लेकर नाराजगी जताई थी। ऐसे में इस पूरे घटनाक्रम में संगठनात्मक अनुशासन के साथ-साथ नेताओं के बीच पुराने मतभेद भी चर्चा का विषय बने हुए हैं।

बिहार की राजनीति में विधान परिषद चुनाव के दौरान शुरू हुआ यह विवाद अब पार्टी से निष्कासन और विधानसभा सदस्यता पर संभावित कार्रवाई तक पहुंच गया है। जेडीयू के फैसले से स्पष्ट है कि पार्टी नेतृत्व ने आधिकारिक उम्मीदवार के खिलाफ प्रचार को गंभीर अनुशासनहीनता माना है। अब आगे यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष सदस्यता को लेकर कोई औपचारिक सिफारिश की जाती है या नहीं और उस पर क्या निर्णय होता है। फिलहाल, अनंत सिंह और नीलम देवी को छह साल के लिए जेडीयू से निष्कासित किए जाने के बाद बिहार का यह राजनीतिक घटनाक्रम है। जेडीयू ने अनंत सिंह और नीलम देवी के मामले में इसी अनुशासनात्मक

फारूक अब्दुल्ला के बयान पर सियासी घमासान, भाजपा ने मांगी देश से माफी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर की राजनीति में नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला के पाकिस्तान तथा केंद्र सरकार को लेकर दिए गए कथित बयान पर विवाद खड़ा हो गया है। बारमूला में पार्टी कार्यक्रमों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए अब्दुल्ला ने कहा कि पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उठाता है और यही वह ऐसा नहीं करता, तो कश्मीर को बचाना मुश्किल हो जाता। उन्होंने दिल्ली की मंशा पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि कश्मीरियों को अपने अधिकारों के लिए खुद संघर्ष करना होगा। उनके इस बयान पर जम्मू-कश्मीर में तीखी प्रतिक्रिया दी है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा ने अब्दुल्ला की टिप्पणी को देश की एकता और अखंडता के लिए नुकसानदेह बताते हुए उनसे देश की 140 करोड़ जनता से माफी मांगने की मांग की है। इस राजनीतिक विवाद के बीच स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी फाइलों के लंबित रहने का मुद्दा भी चर्चा में आ गया है।



मंशा को लेकर भी सवाल खड़े किए और कहा कि कश्मीरियों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए स्वयं संघर्ष करना होगा। उनके इस कथन को लेकर राजनीतिक हलकों में बहस शुरू हो गई है। भाजपा ने जहां इस टिप्पणी पर आपत्ति जताई, वहीं बयान ने केंद्र और जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक संबंधों को लेकर जग्री बहस को फिर सामने ला दिया। फारूक अब्दुल्ला के बयान पर जम्मू-कश्मीर भाजपा अध्यक्ष सत शर्मा ने कड़ा पलटवार किया। उन्होंने आरोप लगाया कि इस तरह की टिप्पणियां देश की एकता और अखंडता को नुकसान पहुंचाती हैं। शर्मा ने अब्दुल्ला की राजनीतिक सोच पर सवाल उठाते हुए कहा कि उनकी सोच वर्ष 1953 जैसी बनी हुई है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि अब्दुल्ला को पाकिस्तान से इनाम लाया है, तो उन्हें वहीं जाकर बस जाना चाहिए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष की इस टिप्पणी से दोनों पक्षों के बीच बयानबाजी और तेज हो गई है।

सत शर्मा ने फारूक अब्दुल्ला से देश की 140 करोड़ जनता से माफी मांगने की मांग की। उनका आरोप था कि अब्दुल्ला अपने बयानों के जरिए देश को का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने दावा किया कि वे फाइलें एक वर्ष से अधिक समय से उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के कार्यालय में अटकी हुई हैं और उन पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है। अब्दुल्ला ने इस कथित दंगे को लेकर सवाल उठाते हुए कहा कि संबंधित मामलों पर समय रहते भूमिका को इस तरह प्रस्तुत चाहिए। हालांकि, अब्दुल्ला की टिप्पणी और उस पर भाजपा की प्रतिक्रिया दोनों राजनीतिक पक्षों के अपने-अपने दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। इस विवाद में बयान के संदर्भ और उसके पूरे आशय को समझना भी महत्वपूर्ण है। फारूक अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर की राजनीति के वरिष्ठ नेताओं में शामिल हैं और नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष के तौर पर लंबे समय से सक्रिय हैं। उनके बयानों का राज्य की राजनीति में व्यापक असर पड़ता है। कश्मीर के अधिकारों, केंद्र सरकार की भूमिका और पाकिस्तान के साथ जुड़े मुद्दों पर उनके विचार पहले भी राजनीतिक बहस का हिस्सा रहे हैं। ताजा बयान के बाद भाजपा ने जिस तरह प्रतिक्रिया दी है, उससे स्पष्ट है कि कश्मीर से जुड़े राजनीतिक मुद्दों पर दोनों दलों के बीच मतभेद सार्वजनिक रूप से सामने आ रहे हैं।

हालांकि, इस विवाद का राजनीतिक प्रभाव क्या होगा, यह आगे की घटनाओं और संबंधित पक्षों की प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करेगा। इसी बीच फारूक अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर में स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी कुछ फाइलों के लंबित रहने का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने दावा किया कि वे फाइलें एक वर्ष से अधिक समय से उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के कार्यालय में अटकी हुई हैं और उन पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है। अब्दुल्ला ने इस कथित दंगे को लेकर सवाल उठाते हुए कहा कि संबंधित मामलों पर समय रहते फैसला होना चाहिए। उनका कहना था कि इन फाइलों का संबंध स्वास्थ्य क्षेत्र की व्यवस्था और चिकित्सा शिक्षा से जुड़े विषयों से है। हालांकि, फाइलों के लंबित रहने और उनके निस्तारण की स्थिति की स्वतंत्र पुष्टि के लिए संबंधित सरकारी विभागों या उपराज्यपाल कार्यालय की प्रतिक्रिया आवश्यक है। अब्दुल्ला ने चिकित्सा शिक्षा से जुड़े विचार्यों की एक व्यवस्था का भी उल्लेख किया। उनके अनुसार, केंद्र शासित प्रदेश में पढ़ाई करने वाले छात्रों को दो वर्ष तक अस्पताल में काम करना पड़ता है। ऐसा नहीं करने पर उन्हें सरकार को 40 लाख रुपये देने होते हैं। उन्होंने इस व्यवस्था से संबंधित फाइलों पर निर्णय नहीं करने का सवाल उठाया। उनके बयान से यह मुद्दा सामने आया कि चिकित्सा शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थियों के लिए निर्धारित सेवा विरोध किया, तो दोनों पक्षों के बीच बहस को लेकर स्थिति क्या है।

बंगाल में विजयादशमी के बैनर पर बवाल, भाजपा-टीएमसी समर्थक भिड़े

दुर्गापुर। पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में विजयादशमी की शुभकामनाओं वाले बैनर और झंडे लगाने को लेकर राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया। न्यूटन इलाके में भाजपा कार्यकर्ताओं और तृणमूल कांग्रेस के श्रमिक संगठन की कोर कमिटी के पूर्व सदस्य बंटी सिंह के समर्थकों के बीच शुरू हुई कहासुनी देखते ही देखते झड़प में बदल गई। दोनों पक्षों के बीच मारपीट होने और एक-दूसरे पर अंडे फेंकने के आरोप सामने आए हैं। इतना ही नहीं, एक युवक को नाले में गिराकर पीटने का आरोप भी लगाया गया है। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची दुर्गापुर थाना पुलिस को भी स्थिति संभालने के दौरान धक्का-मुक्की का सामना करना पड़ा। त्योहार की भावों या उपराज्यपाल कार्यालय की प्रतिक्रिया आवश्यक है। अब्दुल्ला ने चिकित्सा शिक्षा से जुड़े विचार्यों की एक व्यवस्था का भी उल्लेख किया। उनके अनुसार, केंद्र शासित प्रदेश में पढ़ाई करने वाले छात्रों को दो वर्ष तक अस्पताल में काम करना पड़ता है। ऐसा नहीं करने पर उन्हें सरकार को 40 लाख रुपये देने होते हैं। उन्होंने इस व्यवस्था से संबंधित फाइलों पर निर्णय नहीं करने का सवाल उठाया। उनके बयान से यह मुद्दा सामने आया कि चिकित्सा शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थियों के लिए निर्धारित सेवा विरोध किया, तो दोनों पक्षों के बीच बहस को लेकर स्थिति क्या है।

तनावपूर्ण हो गया और कहासुनी ने झड़प का रूप ले लिया। इस दौरान मारपीट और अंडे फेंके जाने के आरोप भी सामने आए। भाजपा के एक नेता के मुताबिक, पार्टी कार्यकर्ताओं ने विजया सम्मेलन के लिए पहले से ही झंडे और बैनर लगाए थे। सुबह जब उन्हें झंडे हटाय जाते की जानकारी मिली, तो कार्यकर्ताओं ने इस पर आपत्ति जताई। उनका आरोप है कि इसी विरोध के दौरान दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए और विवाद बढ़ गया। भाजपा की ओर से घटना को लेकर विरोध जताया गया है। हालांकि, झंडे हटाने को लेकर विवाद किस तरह शुरू हुआ और झड़प के दौरान किस पक्ष की क्या भूमिका रही, इसकी पूरी जानकारी जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

घटना के दौरान एक युवक को नाले में गिराकर पीटने का आरोप भी सामने आया है। इसके अलावा, दोनों पक्षों की ओर से एक-दूसरे पर अंडे फेंकने और मारपीट करने के आरोप लगाए गए हैं। इस तरह की घटनाओं से इलाके में तनाव की स्थिति पैदा हो गई। हालांकि, इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी आवश्यक है। घटना में शामिल लोगों की भूमिका और झड़प के वास्तविक कारणों का पता लगाने के लिए पुलिस को जांच महत्वपूर्ण मानी जा रही है।

विवाद बढ़ने की सूचना मिलने के बाद दुर्गापुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने और दोनों पक्षों के बीच तनाव कम करने का प्रयास किया। इसी दौरान पुलिसकर्मियों के साथ भी धक्का-मुक्की होने की जानकारी मिली। पुलिस की मौजूदगी के बावजूद घटना को लेकर इलाके में तनाव बना रहा। हालांकि, पुलिस की ओर से घटना के संबंध में विस्तृत आधिकारिक जानकारी सामने आने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि मामले में कितने लोग शामिल थे, किसी को चोट आई या नहीं और अब तक क्या कार्रवाई की गई है। इस घटना ने दुर्गापुर में स्थानीय स्तर पर राजनीतिक तनाव को भी चर्चा में ला दिया है। पश्चिम बंगाल में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच स्थानीय स्तर पर होने वाले विवाद टकराव का कारण बन जाते हैं। न्यूटन इलाके में विजयादशमी के बैनर और झंडों को लेकर हुआ विवाद भी इसी तरह राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक पहुंच गया है। हालांकि, इस मामले में विवाद की वजह और घटनाक्रम को लेकर फिलहाल दोनों पक्षों के आरोपों को जांच के आधार पर ही परखा जाना चाहिए। इसी बीच, घटना के साथ बंटी सिंह के

भाजपा में शामिल होने की अटकलों ने भी राजनीतिक चर्चा को हवा दी है। भाजपा के पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने और अक्टूबर के बाद से पार्टी में शामिल होने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, संबंधित नेता ने यह भी स्पष्ट किया कि उन्हें पार्टी सामने आई है। पुलिस की मौजूदगी के बावजूद घटना को लेकर इलाके में तनाव बना रहा। हालांकि, पुलिस की ओर से घटना के संबंध में विस्तृत आधिकारिक जानकारी सामने आने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि मामले में कितने लोग शामिल थे, किसी को चोट आई या नहीं और अब तक क्या कार्रवाई की गई है। इस घटना ने दुर्गापुर में स्थानीय स्तर पर राजनीतिक तनाव को भी चर्चा में ला दिया है। पश्चिम बंगाल में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के बीच स्थानीय स्तर पर होने वाले विवाद टकराव का कारण बन जाते हैं। न्यूटन इलाके में विजयादशमी के बैनर और झंडों को लेकर हुआ विवाद भी इसी तरह राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक पहुंच गया है। हालांकि, इस मामले में विवाद की वजह और घटनाक्रम को लेकर फिलहाल दोनों पक्षों के आरोपों को जांच के आधार पर ही परखा जाना चाहिए। इसी बीच, घटना के साथ बंटी सिंह के

पंजाब में पराली जलाने पर सीएक्यूएम सख्त, लापरवाही पर होगी कार्रवाई

अमृतसर। पंजाब में पराली जलाने की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने सख्त रुख अपनाया है। आयोग ने स्पष्ट किया है कि पराली जलाने की घटनाओं पर प्रभावी रोकथाम नहीं होने और जिम्मेदारियों के निर्वहन में लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी। आयोग के अध्यक्ष राजेश वर्मा के नेतृत्व में उच्चस्तरीय टीम ने शनिवार को अमृतसर और तरनतारन जिलों में पराली प्रबंधन की स्थिति की समीक्षा की। इस दौरान जिला प्रशासन के अधिकारियों को गांवों में निगरानी बढ़ाने, किसानों को आवश्यक मशीनरी समय पर उपलब्ध कराने और कृषि अवशेषों के वैकल्पिक उपयोग को बढ़ावा देने के निर्देश दिए गए। आयोग ने साफ किया कि पराली प्रबंधन को केवल कागजी योजना तक सीमित रखने के बजाय जमीन पर प्रभावी तरीके से लागू करना होगा। बैकड में पराली प्रबंधन से जुड़ी व्यवस्थाओं की विस्तार से समीक्षा की गई। इसमें खेतों में पराली का प्रबंधन करने वाली इन-सीटू व्यवस्था और खेतों से बाहर निकालकर उसके उपयोग की एक्स-सीटू व्यवस्था, उपलब्ध मशीनरी, बुनियादी सुविधाओं तथा प्रशासनिक समन्वय जैसे मुद्दे शामिल रहे। आयोग ने अधिकारियों से कहा कि किसानों की मशीनों की उपलब्धता की जानकारी देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जरूरत के समय उन्हें मशीनें और अन्य जरूरी सुविधाएं मिल सकें। पराली जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए किसानों को व्यावहारिक विकल्प उपलब्ध कराना जरूरी है, ताकि फसल कटाई के बाद खेतों को अगली फसल के लिए तैयार करने में उन्हें अनावश्यक परेशानी न हो। आयोग ने कस्टम हार्थिंग सेंटर, मशीनरी उपलब्ध कराने वाले संस्थानों और



इकाइयों में पराली के वास्तविक इस्तेमाल की नियमित निगरानी करने को कहा गया। आयोग ने निर्देश दिया कि केवल योजनाओं या संभावित उपयोग के आंकड़ों के आधार पर स्थिति का आकलन न किया जाए, बल्कि यह भी देखा जाए कि उद्योगों में वास्तव किसानों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करने पर भी जोर दिया। अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि मशीनों की उपलब्धता, उनकी कार्यक्षमता और किसानों की जरूरतों के बीच समन्वय बनाया जाए। पराली प्रबंधन के लिए इस्तेमाल होने वाली मशीनें तभी प्रभावी साबित होंगी, जब वे किसानों तक सही समय पर पहुंचें और उनका उपयोग सुनिश्चित हो। इसके लिए जिला स्तर पर व्यवस्थाओं की नियमित समीक्षा करने और जरूरत के अनुसार कमियों को दूर करने की आवश्यकता बताई गई। पराली जलाने की समस्या का स्थायी समाधान खोजने के लिए आयोग ने कृषि अवशेषों के औद्योगिक उपयोग को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया। थर्मल पावर प्लांट, ईट भट्टों और अन्य औद्योगिक इकाइयों में पराली से बने पेलेट तथा अन्य उपयुक्त उत्पादों को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने की संभावनाओं पर ध्यान देने के निर्देश दिए गए। आयोग ने माना कि खेतों में आग लगने की घटनाओं को रोकने के लिए केवल घटना सामने आने के बाद कार्रवाई करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए पहले से निगरानी, किसानों से संवाद और समय पर सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था जरूरी है। आयोग ने चेतावनी दी कि पराली जलाने की रोकथाम के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाने या निर्धारित जिम्मेदारियों के निर्वहन में लापरवाही बरतने पर



नवसर्जन संस्कृति

हिन्दी



JioTV

CHENNAL NO. 2063



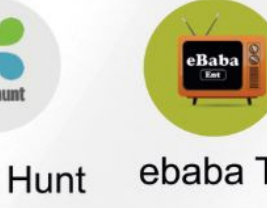
Jio Air Fiber



Jio Tv +



Jio Fiber



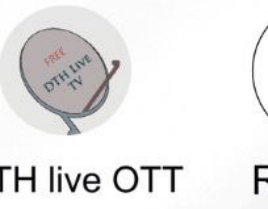
Daily Hunt



ebaba Tv



Dish Plus



DTH live OTT



Rock TV



Airtel



Amezone Fire



Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार

प्राप्त करने के लिए आज ही

नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये



संपादकीय

आईटीबीपी डीजी के बयानों से सियासत गरमाई

ब्रिक्स समेत कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लगातार मैत्री की बात करने वाले चीन द्वारा एलएसी पर तनाव पैदा करने की खबरें चिंता बढ़ाने वाली हैं। अरुणाचल बॉर्डर पर भारत व चीन के आमने-सामने होने की खबरों के सामने आने के बाद इस मुद्दे पर सियासत भी तेज हो गई है। दरअसल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने गुरुवार को एक कार्यक्रम में कहा कि पिछले कुछ समय से अरुणाचल प्रदेश में आईटीबीपी के जवान व पीएलए के सैनिक आमने-सामने आए हैं। यह स्थिति बदली नहीं है। उनके इस बयान के बाद कांग्रेस व विपक्ष ने केंद्र सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। विश्व द्वारा इस मुद्दे को लेकर सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाये जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि इस वर्ष जुलाई में उत्तर-पूर्वी सीमा पर तनाव शुरू होने के उपरांत पहली बार आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि हुई है। बताते हैं कि अरुणाचल प्रदेश में सुबनसिरी जिले के असाफिला और माजा इलाके में यह तनाव बना हुआ है। वहीं सीमा पर तनाव के खुलासे और विपक्षी हमलों के बाद विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा कहा गया है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवादों को सुलझाने के लिये दोनों देश लगातार प्रयासरत हैं। दोनों पक्ष महसूस करते हैं कि भारत-चीन के बेहतर रिश्ते सीमा की शांति पर ही निर्भर करते हैं। बहरहाल, अरुणाचल को भारतीय संप्रभु हिस्से के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता के बावजूद उसे दक्षिण तिब्बत कहना चीन के नापाक इरादों को ही दर्शाता है। वहीं आईटीबीपी के हालिया खुलासे में इस बात का भी जिक्र हुआ कि जुलाई से अब तक दोनों देशों के बीच तीन उच्चस्तरीय बैठकें हुई हैं, लेकिन तनाव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। जबकि इस दौरान ब्रिक्स सम्मेलन में भाग लेने के लिये चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत भी आ चुके हैं। यही वजह है कि कांग्रेस आरोप लगा रही है कि जुलाई से सीमा पर तनाव होने की खबरों को देश से छिपाया गया है। निस्संदेह, भारत व चीन के बीच साढ़े तीन हजार किलोमीटर लंबी सीमा से जुड़े विवादों को लेकर देश चिंतित रहा है। भारतीयों के दिलों में 1962 के चीनी हमले के जखम अभी भरे नहीं हैं। ‘मुंह में राम और बगल में छुरी’ की चीन की नीति पर भरोसा करना संभव भी नहीं है। हाल के वर्षों में गलवान का छल देशवासियों को याद है, जब हमने अपने बीस वीर जवानों को खोया था। वहीं भारत तिब्बत सीमा पुलिस के डीजी शत्रुजीत कपूर ने वार्षिक हिमवीर सम्मान समारोह के दौरान कहा था कि अरुणाचल सीमा पर तनाव के दौरान आईटीबीपी के कमांडो मुस्ताद रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी नई गठित उन्नेई कमांडो टीमों ने इस दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज्यस्थान के अलवर स्थित सेंट्रल ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में कपूर ने चीन की उन्नत सैन्य तकनीकों के मुकाबले के लिये आधुनिक हथियारों की जरूरत भी बतायी। उन्होंने स्वीकार किया कि पारंपरिक हथियारों व तरीकों से चीन का मुकाबला करना मुश्किल होगा। चीन ने बुनियादी ढांचे और हथियारों के आधुनिकीकरण में भारी निवेश किया है। आईटीबीपी के डीजी ने आधुनिक युद्धों के तौर -तरीकों में आ रहे बदलावों का जिक्र करते हुए कहा कि आज ड्रोन जैसी तकनीक से छोटे देश भी बड़े देशों का मुकाबला कर रहे हैं। उन्होंने ईरान द्वारा अमेरिका का मुकाबला करने तथा यूक्रेन द्वारा रूस को पहुंचाये जा रहे बड़े-दूसरे का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि आईटीबीपी के आधुनिकीकरण के लिये चार हजार करोड़ का बजट बनाया गया है। जिसमें से एक हजार करोड़ रुपये ड्रोन शक्ति बढ़ाने पर खर्च किए जाएंगे। जिसमें एंटी ड्रोन सिस्टम मजबूत करना भी शामिल हैं। जिसके लिए ड्रोन प्लांट्स बनायी गई हैं। वहीं ड्रोन पावरप्लंटों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही अपने ड्रोन खुद बनाने पर काम चल रहा है। इसके अलावा भूमिगत शेल्टर बनाने पर भी जोर दिया जा रहा है। आने वाले समय में भूमिगत ढांचे स्थायी सुरक्षा व्यवस्था का हिस्से होंगे। निस्संदेह, भविष्य में गलवान जैसा संघर्ष सामने न आए, उसके लिये अभी से तैयारी करने की जरूरत है।

अभियान

श्रीरामचरितमानस में रावण की कथा केवल एक शक्तिशाली राक्षस के जन्म और उसके उत्थान की कहानी नहीं है, बल्कि यह कर्म, धर्म, तपस्या, भक्ति और अहंकार के परिणामों को समझाने वाला महत्वपूर्ण प्रसंग भी है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने रावण के जन्म से लेकर उसके भाइयों की तपस्या और ब्रह्मजी से वरदान प्राप्त करने तक की घटनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि एक ही परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्तियों की सोच और जीवन का उद्देश्य अलग-अलग हो सकता है। कोई अपनी शक्ति से संसार पर अधिकार करना चाहता है, कोई अपनी इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता है, तो कोई ईश्वर की भक्ति को ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानता है। रावण, कुंभकर्ण और विभीषण की कथा इसी अंतर को उजागर करती है।

रावण के रूप में हमने देखा कि किस प्रकार राजा प्रतापमानु कपटमुनि के चरित्रयंत्र में फंस गया था। अपने परमपूज्य से अनेक राजाओं को पराजित करने वाला प्रतापमानु छल और परिस्थितियों के जाल में ऐसा उलझा कि उसे ब्राह्मणों के शाप का भागी बनना पड़ा। समय आने पर उसी प्रतापमानु ने राक्षस यौनि में रावण के रूप में जन्म लिया। उसके छोटे भाई अरिमर्दन ने कुंभकर्ण के रूप में जन्म लिया, जबकि उसका मंत्री धर्मरुचि विभीषण के रूप में उत्पन्न हुआ। इस प्रकार पूर्वजन्म

आखिर क्यों धधक रहा है फ्रांस और अन्य यूरोपीय देश?

भले ही फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों की परिस्थितियाँ भी एक जैसी नहीं हैं। इसलिए यह देखना आवश्यक है कि अशांति किन कारणों से भड़कती है, पुलिस की कार्रवाई कहाँ कठिन हो जाती है और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा करते हुए हिंसा रोकने के लिए कौन-से उपाय प्रभावी हो सकते हैं।

प्रेरणा

कुछ लोग अपने सपनों को पूरा करने के लिए रास्ते की तलाश करते हैं, जबकि कुछ ऐसे होते हैं जो अपने संकल्प और मेहनत से नए रास्ते बना देते हैं। उनका जीवन इस बात की मिसाल बन जाता है कि परिस्थितियाँ चाहे किन्ती भी कठिन क्यों न हों, यदि मन में कुछ नया करने की लगन हो तो असंभव दिखाई देने वाले लक्ष्य भी हासिल किए जा सकते हैं। मैरी क्यूरी ऐसी ही महान वैज्ञानिक थीं, जिन्होंने अपने ज्ञान, साहस और अथक परिश्रम से विज्ञान की दुनिया में एक नया अध्याय लिखा। उनकी कहानी केवल एक वैज्ञानिक की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि उस विश्वास की कहानी है, जो कठिनाइयों के बीच भी इंसान को आगे बढ़ने की शक्ति देता है। कल्पना कीजिए, एक युवा विद्यार्थी किसी दिन मैरी क्यूरी की प्रयोगशाला में पहुँचता है। वहाँ उनकी नजर एक शीशी पर पड़ती है, जो अंधेरे में नीली रोशनी से चमक रही है। उस अद्भुत दृश्य को देखकर उसके मन में सवाल उठता है कि क्या यही वह खोज है, जिसने मैरी क्यूरी को दुनिया भर में प्रसिद्धि दिलाई। वह उनसे पूछ बैठता है कि क्या यह उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। मैरी क्यूरी का उत्तर उसे सोचने पर मजबूर कर देता है। वह बताती हैं कि किसी भी बड़ी उपलब्धि के पीछे केवल सफलता की चमक नहीं होती, बल्कि संघर्ष, त्याग, धैर्य और कठिन परिश्रम की लंबी कहानी भी होती है। उनकी बातों में एक ऐसा अनुभव छिपा था, जिसे समझने के लिए उनके जीवन को जानना जरूरी है।

7 नवंबर 1867 को वारसा में जन्मी मैरी क्यूरी का बचपन साधारण परिस्थितियों में बीता। उनका मूल नाम मारिया स्कोलोड्सका था। उन्हें बचपन से ही

और अपनी तपस्या के बल पर असाधारण शक्तियाँ अर्जित कीं। इसके बावजूद उसके व्यक्तित्व में धीरे-धीरे अहंकार और अधिकार की भावना प्रबल होती चली गई। यही अहंकार विरोधाभास उसके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता बना कि ज्ञान और साधार्थ्य होने के बाद भी वह अपने मन पर विजय नहीं प्राप्त कर सकी।

रावण के साथ जन्म लेने वाले उसके दोनों भाइयों का स्वभाव भी अलग-अलग था। तुलसीदासजी कुंभकर्ण के विषय में कहते हैं—

भूप अनुज अरिमर्दन नामा।
भयउ सं कुंभकरन बलधामा॥
अर्थात् प्रतापमानु का छोटा भाई अरिमर्दन अगले जन्म में बलशाली कुंभकर्ण बना। उसके विशाल शरीर और असाधारण बल की चर्चा रामकथा में विशेष रूप से मिलती है। दूसरी ओर, धर्मरुचि नामक मंत्री ने विभीषण के रूप में जन्म लिया। विभीषण का स्वभाव अपने दोनों भाइयों से भिन्न था। उसके भीतर धर्म, सदाचार और भगवान के प्रति भक्ति की भावना थी।

तुलसीदासजी विभीषण के विषय में कहते हैं—

नाम विभीषण जेहि जग जाना।

बिष्नुभगत बियायन निधाना॥
अर्थात् वह संसार में विभीषण के नाम से विख्यात हुआ। वह भगवान विष्णु का भक्त और अपनी तपस्या के बल पर असाधारण शक्तियाँ अर्जित कीं। इसके बावजूद उसके व्यक्तित्व में धीरे-धीरे अहंकार और अधिकार की भावना प्रबल होती चली गई। यही अहंकार विरोधाभास उसके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता बना कि ज्ञान और साधार्थ्य होने के बाद भी वह अपने मन पर विजय नहीं प्राप्त कर सकी।

नवसर्जन संस्कृति

आखिर क्यों धधक रहा है फ्रांस और अन्य यूरोपीय देश? पुलिस प्रशासन के सामने क्या हैं चुनौतियाँ?

यूरोप में हिंसक विरोध-प्रदर्शनों, दंगों, आगजनी और पुलिस के साथ टकराव को केवल कानून-व्यवस्था की समस्या मानकर नहीं समझा जा सकता। चूंकि इसके पीछे आर्थिक असंतोष, सामाजिक विभाजन, आत्रजन और एकीकरण की बहस, राजनीतिक ध्रुवीकरण, युवाओं में भविष्य को लेकर चिंता तथा पुलिस और नागरिकों के बीच विश्वास का संकट जैसे कई कारक हो सकते हैं लेकिन एक बुनियादी अंतर समझना जरूरी है, वह यह कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन लोकतांत्रिक अधिकार है, जबकि आगजनी, लूटपाट, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान और लोगों पर हमले अपराध हैं। किसी प्रदर्शन में हिंसा होने का अर्थ यह नहीं कि उसमें शामिल हर व्यक्ति हिंसक है या पूरा समुदाय उसके लिए जिम्मेदार है। शापद इसी भ्रम में देश के देश जल रहे हैं और पुलिस तत्काल बहुत कुछ कर नहीं पाती। इससे आताइयों के हौसले बुलंद हैं और लोकतांत्रिक सोच अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही है।

भले ही फ्रांस और अन्य यूरोपीय देशों की परिस्थितियाँ भी एक जैसी नहीं हैं। इसलिए यह देखना आवश्यक है कि अशांति किन कारणों से भड़कती है, पुलिस की कार्रवाई कहाँ कठिन हो जाती है और लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा करते हुए हिंसा रोकने के लिए कौन-से उपाय प्रभावी हो सकते हैं। सवाल है कि अक्टूबर 2026 में फ्रांस में वास्तव में क्या हो रहा है? तो जवाब होगा कि फ्रांस में सितंबर के अंत से शुरू हुआ छात्र आंदोलन अक्टूबर में व्यापक अंशों में बदल गया। प्रांरिक असंतोष कोशकों की खराब सुविधाओं, शिक्षकों की कमी और शिक्षा व्यवस्था से जुड़ी शिकायतों को लेकर था। बाद में महंगाई, जीवन-यापन की बढ़ती लागत और सार्वजनिक सेवाओं की स्थिति जैसे मुद्दे भी आंदोलन से जुड़ गए।

आखिर पेरिस सहित कई शहरों में लूटपाट, तोड़फोड़ और पुलिस से टकराव हुए। सरकार को बड़ी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात करने पड़े और कुछ क्षेत्रों में रात्रिकालीन कर्फ्यू प्रतिबंध लगाए गए। फ्रांसीसी अधिकारियों ने सुरक्षा व्यवस्था की तैयारियों और हिंसा समय इटली में भी जीवन-यापन की लागत, कम वेतन और सार्वजनिक सेवाओं से जुड़ी शिकायतों के बीच प्रदर्शन हिंसक हुए। स्पेन और

पढ़ने, समझने और नई चीजों के बारे में जानने की गहरी रूचि थी। वह हर प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करती थीं। उस समय महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के अवसर सीमित थे और आर्थिक कठिनाइयाँ थी उनके सामने बड़ी चुनौती थी। लेकिन उन्होंने इन बाधाओं को अपने सपनों के रास्ते की दीवार नहीं बनने दिया। बेहतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह पेरिस गए। वहाँ उन्होंने कठिन परिस्थितियों में पढ़ाई की और अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए लगातार प्रयास करती रहीं। उनका जीवन बताता है कि सपने देखने से अधिक महत्वपूर्ण उन सपनों के लिए निरंतर मेहनत करना है। पेरिस में पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात वैज्ञानिक पियरे क्यूरी से हुई। विज्ञान के प्रति दोनों की गहरी रुचि ने उन्हें एक-दूसरे के करीब ला दिया। विवाह के बाद उन्होंने मिलकर वैज्ञानिक अनुसंधान का कार्य आगे बढ़ाया। दोनों का उद्देश्य प्रकृति के उन रहस्यों को समझना था, जिनके बारे में उस समय वैज्ञानिकों के पास बहुत सीमित जानकारी थी। उन्होंने रेडियोधर्मिता के अध्ययन पर गंभीरता से काम किया। यह काम आसान नहीं था। प्रयोगों के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं थे और कई बार उन्हें बेहद कठिन परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करना पड़ता था। इसके बावजूद मैरी क्यूरी का उसका कम नहीं हुआ। वह हर प्रयोग को नए ज्ञान की दिशा में एक कदम मानती थीं।

लागातार शोध और अनेक प्रयोगों के बाद मैरी और पियरे क्यूरी ने 1898 में पोलोनियम और रेडियम नामक तत्वों को खोजा। यह उपलब्धि विज्ञान के इतिहास में महत्वपूर्ण साबित हुई। रेडियम के गुणों और ज्ञान का भंडार था। यह प्रसंग बताता है कि एक ही परिवार में जन्म लेने के बावजूद व्यक्ति का चरित्र उसकी अपनी सोच और कर्म से निर्मित होता है। रावण ने शक्ति और विजय को महत्व दिया, कुंभकर्ण अपने असाधारण बल के लिए प्रसिद्ध हुआ, जबकि विभीषण ने धर्म और भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया। यही अंतर आगे चलकर तीनों भाइयों के भाग्य और उनके निर्णयों में दिखाई देता है।

समय के लंबे के साथ तीनों भाइयों के मन में असाधारण शक्ति प्राप्त करने की इच्छा जागी। उन्होंने कठोर तपस्या करके ब्रह्मजी को प्रसन्न करने का निश्चय किया। तीनों भाई अलग-अलग प्रकार से तप में लीन हो गए। उनकी तपस्या इतनी कठिन थी कि उसका वर्णन करना भी सरल नहीं था। वे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए लंबे समय तक साधना करते रहे। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मजी उनके सामने प्रकट हुए और वरदान मांगने को कहा। श्रीरामचरितमानस में इस प्रसंग का वर्णन है—

कोन्ह बिबिध तप तनिहूँ भाई।
परम उत नहिं बतौन सो जाई॥
गयन निकट तप देखि बिबाधा॥
मागहु बर प्रप्तन मैं ताता॥
अर्थात् तीनों भाइयों ने अत्यंत कठोर तपस्या की। उनकी साधना देखकर ब्रह्मजी प्रसन्न

नवसर्जन संस्कृति

आखिर क्यों धधक रहा है फ्रांस और अन्य यूरोपीय देश? पुलिस प्रशासन के सामने क्या हैं चुनौतियाँ?



पुर्तगाल में आवास की समस्या को लेकर विरोध प्रदर्शन हुए हैं। हालांकि, इन सभी घटनाओं के कारण और उनका स्वरूप अलग-अलग हैं। पहला, महंगाई, आवास और आर्थिक असुरक्षा: जब किराया, ऊर्जा, परिवहन और रोजगार के खर्च बढ़ते हैं, लेकिन आय और रोजगार के अवसर उसी गति से नहीं बढ़ते, तो लोगों में व्यवस्था के प्रति नाराजगी बढ़ सकती है। युवाओं के लिए अच्छी शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्र जीवन की संभावनाएँ सीमित महसूस होना इस असंतोष को और बढ़ा सकता है। दूसरा, सार्वजनिक सेवाओं पर दबाव: स्कूलों में शिक्षकों की कमी, जर्जर सुविधाएँ और स्थानीय सेवाओं की कमजोर स्थिति नागरिकों को यह महसूस करा सकती है कि उनकी समस्याओं को पर्याप्त प्राथमिकता नहीं मिल रही। फ्रांस के हालिया आंदोलन में शिक्षा से जुड़ी शिकायतें शुरुआती मुद्दों में शामिल थीं। तीसरा, सामाजिक अलगाव और अवसरों में असमानता: कुछ शहरी और वंचित इलाकों में रोजगार, शिक्षा और सामाजिक उन्नति के अवसरों की कमी असंतोष को गहरा सकती है। यदि नागरिकों को लगता है कि संस्थाएँ उनकी बात नहीं सुनती या उनके साथ भेदभाव होता है, तो राज्य पर भरोसा कमजोर पड़ सकता है। लेकिन इसे हर उपद्रव का एकमात्र कारण मानना उचित नहीं होगा। चौथा, राजनीतिक ध्रुवीकरण और आंदोलन का हिंसक हो जाना: किसी जायज मांग के साथ बड़ी

ने वैज्ञानिकों के सामने अध्ययन की नई संभावनाएँ खोलीं। अंधेरे में दिखाई देने वाली उसकी चमक लोगों के लिए आश्चर्य का निषय थी, लेकिन मैरी क्यूरी के लिए उसका वास्तविक महत्व उसके वैज्ञानिक गुणों और सांभावित उपयोगों में था। वह जानना चाहती थीं कि प्रकृति में मौजूद इन शक्तियों को किस तरह समझा जा सकता है और उनका उपयोग मानवता के हित में कैसे किया जा सकता है। उनकी मेहनत को दुनिया ने सम्मान भी दिया। वर्ष 1903 में उन्हें भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। इसके बाद 1911 में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार देकर उन्हें फिर सम्मानित किया गया। वह दो अलग-अलग वैज्ञानिक विषयों में नोबेल पुरस्कार पाने वाली पहली व्यक्ति बनीं। यह उपलब्धि उस दौर में विशेष महत्व रखती थी, जब विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। मैरी क्यूरी ने अपने काम से साबित किया कि प्रतिभा किसी सामाजिक सीमा की मोहताज नहीं होती। सफलता का वास्तविक आधार ज्ञान, मेहनत और अपने उद्देश्य के प्रति ईमानदारी है।

हालाँकि उनकी वैज्ञानिक यात्रा की कीमत थी उन्हें चुकानी पड़ी। रेडियोधर्मी पदार्थों के साथ लंबे समय तक काम करने के दौरान विकिरण के खतरों की पूरी जानकारी नहीं थी। बाद में उनके स्वास्थ्य पर इसका गंभीर प्रभाव पड़ा। फिर भी उनके जीवन को केवल त्याग की कहानी के रूप में देखना उचित नहीं होगा। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह विज्ञान को मानव जीवन से जोड़कर देखती थीं। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने घायल सैनिकों के उपचार में एक्स-रे तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दिया। मोबाइल रेडियोग्राफी इकाइयों के माध्यम से चिकित्सकों को घायलों की चोटों का पता लगाने में सहायता मिली। इस प्रकार उन्होंने अपने वैज्ञानिक ज्ञान को प्रयोगशाला से बाहर निकालकर मानव सेवा का माध्यम बनाया।

4 जुलाई 1934 को मैरी क्यूरी का निधन हो गया, लेकिन उनका योगदान आज भी जीवित

है। चिकित्सा विज्ञान में रेडियोधर्मिता के निर्यातित उपयोग और कैंसर के कुछ प्रकारों के उपचार में विकिरण चिकित्सा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक चिकित्सा में इन तकनीकों का विकास अनेक वैज्ञानिकों के लंबे अनुसंधान का परिणाम है, लेकिन मैरी क्यूरी के शुरुआती शोध ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण आधार तैयार किया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि किसी भी बड़ी उपलब्धि के पीछे केवल बुद्धिमत्ता नहीं, बल्कि लगातार सीखने और कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता भी होती है। रास्ते में आने वाली बाधाएँ हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर देने के लिए भी हो सकती हैं। सच्ची सफलता केवल पुरस्कार पाने या प्रसिद्ध होने में नहीं, बल्कि अपने ज्ञान और अनुभव से दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में है। मैरी क्यूरी ने रेडियम की चमक से विज्ञान को नई दिशा दी, लेकिन उनकी सबसे बड़ी रोशनी उनका साहस, समर्पण और मानवता के प्रति विश्वास था। यही रोशनी आज भी हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है, जो अपने सपनों को साकार करने और दुनिया के लिए कुछ सार्थक करने का संकल्प लेकर आगे बढ़ता है।

हए और उनके निकट आकर बोले कि वे अपनी इच्छानुसार वरदान मांग सकते हैं। अब तीनों भाइयों के सामने अपनी-अपनी भूमिका प्रबल प्रकट करने का अवसर था, लेकिन उनकी इच्छाएँ एक जैसी नहीं थीं। सबसे पहले रावण ने अपनी इच्छा व्यक्त की। उसके मन में संसार का सबसे शक्तिशाली और अजेय शासक बनने की आकांक्षा थी। वह चाहता था कि कोई भी देवता, दानव या अन्य शक्तिशाली प्राणी उसका वध न कर सके। अपनी शक्ति पर उसे इतना विश्वास था कि उसने मनुष्य और वानर को अपने लिए कोई बड़ा खतरा नहीं माना। यही उसकी सोच की सबसे बड़ी भूल साबित हुई। तुलसीदासजी लिखते हैं—

करि विनती पद गहि दससीसा।
बोलेउ बचन सुगह जगदीसा।
हे कन्ह कौह के मोहों न माँरे।
बानर मनुज जाति दुइ बारें॥
रावण ने ब्रह्मजी से प्रार्थना की कि उसे ऐसा वरदान मिले, जिससे वह लज्जा सपी शक्तिशाली जातियों के लिए अजेय हो जाए। उसने मनुष्य और वानर को अपनी मृत्यु के भविष्यत कारणों की सूची से बाहर रखा, क्योंकि उसे उनकी शक्ति पर विश्वास नहीं था। उसे लगा कि संसार में ऐसी कोई शक्ति नहीं बच पाएगी, जो उसके साम्राज्य और जीवन को चुनौती दे सके। किंतु उसकी यही उपेक्षा और चलकर उसके विनाश का

नवसर्जन संस्कृति

आखिर क्यों धधक रहा है फ्रांस और अन्य यूरोपीय देश? पुलिस प्रशासन के सामने क्या हैं चुनौतियाँ?

एक, खुफिया आकलन और तैयारी में चूक: फ्रांस में 17 अक्टूबर के प्रदर्शनों के लिए भीड़ का अनुमान मंत्रालय के शुरुआती अनुमान लगभग 60,000–110,000 प्रदर्शनकारियों के थे, जबकि बाद में संशोधित अनुमान 200,000 तक पहुँचे और मंत्रालय ने वास्तविक उपस्थिति लगभग 550,000 बताई। यह सरकारी अनुमान है, स्वतंत्र रूप से सत्यापित अंतिम गणना नहीं। इतनी बड़ी भीड़ के बीच हिंसा करने वाले छोटे समूहों की पहचान और सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा कठिन हो जाती है। दो, पुलिस बल की तैनाती और संसाधनों का असंतुलन: यदि कई शहरों में एक साथ हिंसा फैलती है, तो पुलिस को लोगों की सुरक्षा, दुकानों की रक्षा, यातायात नियंत्रण और हिंसक घटनाओं पर कार्रवाई जैसे अनेक काम करने पड़ते हैं। फ्रांस की हालिया घटनाओं में पुलिसकर्मियों की संख्या और तैनाती के समय को लेकर भी सवाल उठे हैं। तीन, शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी और हिंसा करने वाले एक ही भीड़ में:पुलिस के सामने यह कठिन चुनौती रहती है कि हिंसा करने वालों पर कार्रवाई करते हुए शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों और अस्पास के आम नागरिकों को नुकसान से कैसे बचाया जाए। जल्दबाजी में की गई कार्रवाई तनाव बढ़ा सकती है, जबकि देर करने पर तोड़फोड़ और लूटपाट का दायरा बढ़ सकता है।

चार, पुलिस की कठोर कार्रवाई के कानूनी और सामाजिक परिणाम: फ्रांस में प्रदर्शन के दौरान बल प्रयोग की आवश्यकता, अक्सर अनुपातिकता के विचारों के आधार पर लोगों को संदिग्ध न माना जाए। दूसरा, प्रशिक्षित पुलिस और स्पष्ट कमान: भीड़ प्रबंधन के लिए विशेष प्रशिक्षण, एकीकृत कमान, पर्याप्त संसाधन और नागरिकों को पहचान और सुरक्षित रखने की स्पष्ट जिम्मेदारी हो। बल का प्रयोग कानून के अनुसार आवश्यक और अनुपातिक होना चाहिए। तीसरा, अपराधियों की पहचान और शीघ्र न्याय: जहाँ कानूनी रूप से अनुमत हो, वहाँ उपलब्ध वीडियो, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और अन्य विश्वसनीय साक्ष्यों के आधार पर व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय की जाए। गिरफ्तारी, अभियोजन और न्यायिक प्रक्रिया कानून के अनुरूप हो; निर्दोष लोगों को सामूहिक दंड न दिया जाए।

आर्थिक मोर्चे पर विकास के सकारात्मक संकेत

विपरीत वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद दुनिया भर की रेटिंग संस्थाओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गतिमान स्वीकार करते हुए वैश्विक औसत से लगभग दो गुणी विकास दर रहने की संभावना जताई है। यह इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि वैश्विक परिस्थितियों में कहीं और किसी तरह का सुधार नहीं दिखाई दे रहा है। ईरान-अमेरिका युद्ध हो या रूस-यूक्रेन युद्ध हो या अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के तानाशाही पूर्ण तुगलकी निर्णय हो या कच्चे तेल के भावों में बेतहासा बढोतरी और हार्मुज का संकट हालात समूचे विश्व में विकट से विकटतर बने हुए हैं। अब तो फ्रांस के हालात भी बिगड़ते जा रहे हैं तो उसका असर जहाँ योरोप में दिखाई देगा वहीं भारत में भी हालात भी प्रभावित करने के कतिपय प्रयास जारी हैं। अच्छी बात यह है कि देश-दुनिया के गंभीर हालातों के बावजूद आर्थिक क्षेत्र की दुनिया की लगभग सभी रेटिंग संस्थाओं ने इंडियन इकोनोमी की ग्रोथ रेट को लेकर आशा से भी अधिक विश्वास जताया है। रेटिंग संस्थाओं की ही माने तो 2026 के वैश्विक औसत आर्थिक विकास दर 3 दशमलव 1 फीसदी रहने की संभावना व्यक्त की जा रही है वहीं दुनिया की रेटिंग संस्थाओं ने भारत के आर्थिक परिणामों को देखते हुए जुलाई की तुलना में अक्टूबर आते आते ग्रोथ को 6 दशमलव 9 से लेकर 7 दशमलव 1 रहने की उम्मीद जताई है। खास बात यह है कि विश्व रेटिंग संस्थाओं में से किसी भी संस्था ने जुलाई की रेटिंग की तुलना में नकारात्मक ग्रोथ नहीं दिखा कर ग्रोथ रेट से इजाफा ही जाहिर किया है।दरअसल देश में मांग और आपूर्ति से लेकर निर्यात तक में लगातार विकास देखा जा रहा है। देश में मांग और आपूर्ति की बेहतर व्याख्या के अनुसार, देर सवस्वती की प्रेरणा से उसकी बुद्धि प्रभावित हुई और वह अपनी इच्छानुसार वरदान नहीं मांग सका। परिणामस्वरूप उसने लंबे समय तक सोते रहने का वर प्राप्त किया। इस कारण कुंभकर्ण की पहचान केवल उसके विशाल शरीर और बल से ही नहीं, बल्कि उसकी लंबी निद्रा से भी जुड़ गई। यह प्रसंग एक महत्वपूर्ण संकेत देता है कि शक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और उनके परिणामों के प्रति सजग रहना चाहिए। केवल सामर्थ्य की लालसा जीवन को सफल नहीं बना सकती। यदि व्यक्ति अपने क्षमता का उपयोग उचित उद्देश्य के लिए नहीं करता, तो उसका लाभ सीमित रह जाता है और कभी-कभी वही क्षमता संकट का कारण बन सकती है। अब विभीषण की बारी आई। उसके दोनों भाइयों की इच्छाओं से अलग, उसके मन में भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना थी।

घटनाओं में इन पहलुओं पर भी सवाल उठे हैं। सवाल है कि क्या पुलिस को और अधिक कठोर बना देना ही समाधान है? तो जवाब होगा कि नहीं, मंत्रालय के शुरुआती अनुमान लगभग 60,000–110,000 प्रदर्शनकारियों के थे, जबकि बाद में संशोधित अनुमान 200,000 तक पहुँचे और मंत्रालय ने वास्तविक उपस्थिति लगभग 550,000 बताई। यह सरकारी अनुमान है, स्वतंत्र रूप से सत्यापित अंतिम गणना नहीं। इतनी बड़ी भीड़ के बीच हिंसा करने वाले छोटे समूहों की पहचान और सार्वजनिक स्थानों की सुरक्षा कठिन हो जाती है। दो, पुलिस बल की तैनाती और संसाधनों का असंतुलन: यदि कई शहरों में एक साथ हिंसा फैलती है, तो पुलिस को लोगों की सुरक्षा, दुकानों की रक्षा, यातायात नियंत्रण और हिंसक घटनाओं पर कार्रवाई जैसे अनेक काम करने पड़ते हैं। फ्रांस की हालिया घटनाओं में पुलिसकर्मियों की संख्या और तैनाती के समय को लेकर भी सवाल उठे हैं। तीन, शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी और हिंसा करने वाले एक ही भीड़ में:पुलिस के सामने यह कठिन चुनौती रहती है कि हिंसा करने वालों पर कार्रवाई करते हुए शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों और अस्पास के आम नागरिकों को नुकसान से कैसे बचाया जाए। जल्दबाजी में की गई कार्रवाई तनाव बढ़ा सकती है, जबकि देर करने पर तोड़फोड़ और लूटपाट का दायरा बढ़ सकता है।

चार, पुलिस की कठोर कार्रवाई के कानूनी और सामाजिक परिणाम: फ्रांस में प्रदर्शन के दौरान बल प्रयोग की आवश्यकता, अक्सर अनुपातिकता के विचारों के आधार पर लोगों को संदिग्ध न माना जाए। दूसरा, प्रशिक्षित पुलिस और स्पष्ट कमान: भीड़ प्रबंधन के लिए विशेष प्रशिक्षण, एकीकृत कमान, पर्याप्त संसाधन और नागरिकों को पहचान और सुरक्षित रखने की स्पष्ट जिम्मेदारी हो। बल का प्रयोग कानून के अनुसार आवश्यक और अनुपातिक होना चाहिए। तीसरा, अपराधियों की पहचान और शीघ्र न्याय: जहाँ कानूनी रूप से अनुमत हो, वहाँ उपलब्ध वीडियो, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और अन्य विश्वसनीय साक्ष्यों के आधार पर व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय की जाए। गिरफ्तारी, अभियोजन और न्यायिक प्रक्रिया कानून के अनुरूप हो; निर्दोष लोगों को सामूहिक दंड न दिया जाए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से ‘अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव-2026’ तथा ‘छाप प्रदर्शनी’ का शुभारंभ हुआ

700 से अधिक बुक स्टॉल और 125 से अधिक प्रकाशकों की सहभागिता के साथ पुस्तक प्रेमियों के लिए अनेक आकर्षण

गांधीनगर ː मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से अहमदाबाद रिवरफ्रंट पर ‘अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव-2026’ तथा ‘केंद्रीय कपड़ा मंत्रालय द्वारा आयोजित ‘छाप प्रदर्शनी’ का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली के उप राज्यपाल श्री सरदार तरनजीत सिंह संधू की विशेष उपस्थिति में मुख्यमंत्री सहित महानुभावों के करकमलों से गुरुद्वारा सुधार आंदोलन के प्रणेता और स्वतंत्रता सेनानी सरदार श्री तेजा सिंह समुंद्री के जीवन पर आधारित पुस्तक के गुजराती संस्करण का विमोचन भी किया गया।

अहमदाबाद महानगर पालिका और नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वधान में आयोजित अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के जनसेवा और राष्ट्रसेवा के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित यह पुस्तक महोत्सव ज्ञान, साहित्य और संस्कृति के आदान-प्रदान को नई दिशा देगा।

उन्होंने कहा कि नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार के साथ-साथ उनकी ज्ञान-संपदा मजबूत बने, चिंतनशीलता विकसित हो और समाज में रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिले, यह प्रधानमंत्री के सर्वांगीण विकास के विजन का अभिन्न

त्योहारों के बीच सुरक्षा का जायजा लेने दिल्ली पुलिस मुख्यालय पहुंचे अमित शाह, हाईलेवल बैठक में मंथन

नई दिल्ली। त्योहारों के मौसम में राजधानी दिल्ली की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर केंद्र सरकार सतर्क नजर आ रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दिल्ली पुलिस मुख्यालय पहुंचे, जहां राजधानी की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर उच्चस्तरीय बैठक हो रही है। चार साल से अधिक समय बाद गृह मंत्री का दिल्ली पुलिस मुख्यालय पहुंचना प्रशासनिक और सुरक्षा के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। त्योहारों के दौरान बाजारों, धार्मिक स्थलों, मेट्रो स्टेशनों, रेलवे स्टेशनों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर लोगों की आवाजाही बढ़ने के मद्देनजर पुलिस की तैयारियों की समीक्षा को अहम माना जा रहा है। ऐसे समय में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाए रखना, संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी बढ़ाना और किसी भी अग्रिय घटना को रोकने के लिए समय रहते आवश्यक कदम उठाना पुलिस प्रशासन की प्राथमिकताओं में शामिल है। बैठक में राजधानी की मौजूदा सुरक्षा तैयारियों और कानून-व्यवस्था से जुड़े पहलुओं पर चर्चा होने की उम्मीद है। हालांकि, बैठक के विस्तृत एजेंडे और उसमें लिए गए निर्णयों की आधिकारिक जानकारी सामने आने के बाद ही इसकी

पूरी तस्वीर स्पष्ट होगी। दिल्ली देश की राजधानी होने के साथ-साथ एक प्रमुख राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र भी है। यहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में लोग कामकाज, कारोबार, शिक्षा, पर्यटन और अन्य गतिविधियों के लिए पहुंचते हैं। त्योहारों के दौरान यह संख्या और बढ़ जाती है। प्रमुख बाजारों में खरीदारी के लिए उमड़ने वाली भीड़, धार्मिक आयोजनों में श्रद्धालुओं की भागीदारी और सार्वजनिक परिवहन के साधनों पर बढ़ते दबाव के कारण सुरक्षा प्रबंधन की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। ऐसे में पुलिस के सामने एक साथ कई चुनौतियां होती हैं। भीड़ को व्यवस्थित रखना, यातायात को सुचारु बनाए रखना, संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखना और जरूरत पड़ने पर तुरंत कार्रवाई करना सुरक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। गृह मंत्री की मौजूदगी में हो रही उच्चस्तरीय बैठक को इसी व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की संरक्षा के संदर्भ में देखा जा रहा है।

त्योहारों के दौरान दिल्ली के कर्नाट प्लेस, चांदनी चौक, करोल बाग, सरोजिनी नगर और अन्य प्रमुख बाजारों में खरीदारी करने वालों की संख्या बढ़ जाती है। इसके अलावा, मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और अन्य धार्मिक



अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव-2026 के बारे में

इस फेस्टिवल में बच्चों और विद्यार्थियों के लिए विशेष डोम में साहित्यिक संवाद, विचार-विमर्श, कविता पाठ और विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के मार्गदर्शन सहित कार्यक्रम आयोजित किए जाने हैं। बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और रचनात्मकता विकसित करने के उद्देश्य से (लेगो) LEGO, पजल तथा स्टैम (विज्ञान, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और गणित) आधारित वर्कशॉप का आयोजन किया गया है। इसके अलावा; बच्चों की कल्पनाशक्ति और कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए आर्ट एंड क्राफ्ट फेस्टिवल भी आयोजित किया जाएगा। विशेष रूप से; पहली बार स्कल्पर वर्कशॉप आयोजित की जा रही है, जहाँ बच्चे अनुपयोगी कचरे और वेस्ट प्रोडक्ट्स से रीसाइक्लिंग के माध्यम से सुंदर शिल्पकृतियाँ बनाना सीखेंगे। इसके अलावा; युवा उद्यमियों और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहित करने के लिए एक विशेष ‘इनोवेशन विंग’ भी तैयार की गई है, जिसमें देश के नवीन विचारों, उत्पादों और टेक्नोलॉजी क्षेत्र के नए प्रयोगों को प्रदर्शित किया जाएगा।

अत्याधुनिक ‘नमो सेंट्रल लाइब्रेरी’ की स्थापना के लिए भी बजट में 100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। राष्ट्र निर्माण में बच्चों और युवाओं में संस्कारों के सिंचन पर जोर देते हुए, उन्होंने जोड़ा कि गांधीनगर में

नई पीढ़ी को देश के इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम के नायकों और उनके अमूल्य

योगदान से परिचित कराना आवश्यक है। इस संदर्भ में स्वतंत्रता सेनानी, गुरुद्वारा सुधार आंदोलन के प्रणेता और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति के संस्थापक

सरदार श्री तेजा सिंह समुंद्री के जीवन और विरासत पर आधारित पुस्तक

‘सरदार तेजा सिंह समुंद्री : जीवन और विरासत’ के विमोचन को उन्होंने गौरव का क्षण बताया।

मुख्यमंत्री ने दृढ़तापूर्वक कहा कि मुख्यमंत्री ने आदान-प्रदान को गति देने के साथ गुजरात की साहित्यिक और सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और अधिक मजबूत बनाएगा। इसके लिए उन्होंने नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, अहमदाबाद महानगर पालिका, आयोगकों, प्रकाशकों, लेखकों, साहित्यकारों और महोत्सव से जुड़े सभी लोगों को बधाई दी।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने नागरिकों से पुस्तकों को जीवन का साथी बनाकर जान और संस्कारों का संवर्धन करने तथा विकसित गुजरात से विकसित भारत के

गुजरात पुलिस के आवासीय मकानों के लिए राज्य के पुलिस महानिदेशक श्री ज्ञानेंद्रसिंह मलिक का महत्वपूर्ण निर्णय : भ्रष्टाचार रोकने और त्वरित मरम्मत के लिए नई (एसओपी) जारी

अब ‘काम के कोटेशन’ के बजाय सीधे गुणवत्तापूर्ण ‘सामग्री’ खरीदकर स्टॉक में रखने की पद्धति लागू होगी

गांधीनगर ː राज्य के पुलिस महानिदेशक श्री ज्ञानेंद्रसिंह मलिक द्वारा पुलिस विभाग के आवासीय तथा गैर-आवासीय मकानों के सामान्य मरम्मत और विशेष मरम्मत कार्यों के लिए नई मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी करने का आदेश दिया गया है।

गए वित्तीय वर्ष 2025-2026 में सामान्य मरम्मत अनुदान के अंतर्गत किए गए कार्यों की समीक्षा करने पर ध्यान में आया कि कुल 4,789 कार्यों पर हुए लगभग 119 करोड़ रुपए के खर्च में से करीब 4,119 कार्यों (17.48 करोड़ रुपए अर्थात 86 प्रतिशत कार्य) केवल ‘तीन कोटेशन’ प्राप्त करके किए गए थे। इस पद्धति में मंजूरी प्राप्त करने में काफी समय व्यतीत होता था। साथ ही; प्रशासनिक कठिनाइयाँ और अनियमितताओं के आरोप भी लगते थे।

अब लागू की गई नई पद्धति का मुख्य उद्देश्य इन मरम्मत कार्यों में पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। साथ ही; अनावश्यक समय की बर्बादी तथा

टेंडरिंग/कोटेशन की प्रशासनिक प्रक्रिया को रोककर छोटे-बड़े मरम्मत कार्यों को शीघ्र पूरा करना है। इसके अतिरिक्त, इस नई पद्धति के लागू होने से अनियमितताओं और भ्रष्टाचार की संभावनाएँ पूरी तरह समाप्त हो जाएँगीं।

नई एसओपी के अनुसार; अब से ‘कार्यों के लिए तीन कोटेशन’ मँगाने की पद्धति बंद करके ‘सामग्री के लिए तीन कोटेशन’ प्राप्त करने और आवश्यक सामग्री का पर्याप्त स्टॉक कार्यालय में रखने की व्यवस्था लागू की जाएगी। पुलिस मुख्यालय में क्लोदिंग ऑटोकस्स की तरह ही सिविल और विद्युत कार्यों के लिए खरीदी गई सभी सामग्रियों का निर्धारित स्वरूप के अनुसार स्टॉक रजिस्टर और इश्यू रजिस्टर बनाए रखना होगा। साथ ही, प्रत्येक माह की 5 तारीख तक वर्ग-1 या वर्ग-2 के अधिकारी द्वारा सामग्री का भौतिक सत्यापन करके प्रमाणपत्र देना होगा। कार्यालय प्रमुख को प्रत्येक तीन

महीने में अर्थात जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर की 10 तारीख तक स्वयं

स्टॉक का सत्यापन करना होगा।

इस नई एसओपी से कई लाभ होंगे। जैसे; मरम्मत के लिए आवश्यक स्पेयर पार्ट्स, बिजली और प्लंबिंग से संबंधित सामग्री पहले से ही कार्यालय में स्टॉक में उपलब्ध होने के कारण नल टपकने, लाइट-पंखे बंद होने, वायरिंग खराब होने या पाइपलाइन में लीकेंज जैसी समस्याओं का तत्काल समाधान किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त, कोटेशन की आड़ में होने वाली अनियमितताओं पर रोक लागेगी, क्योंकि सामग्री अधिकृत डीप्टर से प्रतिस्पर्धी दरों पर खरीदी जाएगी। उसका सटीक रिकॉर्ड रखा जाएगा। इतना ही नहीं; अच्छी कंपनियों की गुणवत्तापूर्ण सामग्री का उपयोग किया जाएगा, जिससे बार-बार मरम्मत की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही, कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नियमित स्टॉक सत्यापन की पुलिस लाइनों और पुलिस थानों के रखरखाव कार्यों में तेजी और सटीकता आएगी तथा नागरिकों के कर के पैसे के उपयोग में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित होगी।

बुलाकर कार्य करवाना होगा। यदि कोई बड़ा कार्य केवल सामग्री खरीदने से पूरा नहीं हो सकता और उसके लिए तीन कोटेशन लेने की आवश्यकता पड़ती है, तो कमिश्नरेट, जिला या इकाइयों में कार्य शुरू करने से पहले सक्षम वरिष्ठ अधिकारी (सीपी/ऐज प्रमुख) की लिखित पूर्व मंजूरी प्राप्त करना अनिवार्य होगा। 50 हजार रुपए से अधिक के कार्यों को ‘विशेष मरम्मत’ मानते हुए गुजरात राज्य पुलिस आवास निगम लिमिटेड के कार्यपालक अभियंता के परामर्श से प्रस्ताव भेजना होगा।

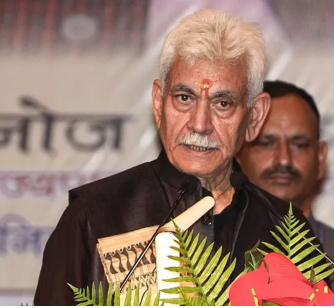
आवासीय मकानों और कार्यालयों की मरम्मत के संबंध में प्राप्त होने वाली शिकायतों को दर्ज करने तथा उनका निवारण कब हुआ, इसका विवरण रखने के लिए अलग रजिस्टर बनाए रखना होगा। इस कार्यालय आदेश से राज्यभर की पुलिस लाइनों और पुलिस थानों के रखरखाव कार्यों में तेजी और सटीकता आएगी तथा नागरिकों के कर के पैसे के उपयोग में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित होगी।

विरासत की जड़ों से जुड़कर विकास की नई ऊंचाइयां छुएं युवा: मनोज सिन्हा

गाजीपुर। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने युवाओं से विकास और विरासत के बीच संतुलन बनाकर देश को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया है। प्रसिद्ध साहित्यकार, उपन्यासकार और पटकथा लेखक राही मासूम रजा की जन्म शताब्दी के अवसर पर आयोजित स्मारक कार्यक्रम के लिए अपने संदेश में उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र की प्रति केवल आर्थिक समृद्धि, आधुनिक तकनीक और मजबूत बुनियादी ढांचे से नहीं मापी जाती, बल्कि उसकी सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक विरासत और मानवीय मूल्यों से भी उसकी पहचान बनती है। युवाओं को आधुनिक भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ अपनी जड़ों, परंपराओं और संरीक्षणा को पहचान को भी सहेजकर रखना होगा।

उन्होंने राही मासूम रजा के साहित्यिक और सिनेमैटिक योगदान को याद करते हुए कहा कि उनकी रचनाएं भारतीय समाज की विविधता, साझा संस्कृति, भाईचारे और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। ऐसे समय में, जब देश विकसित भारत-2047 के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है, युवाओं के लिए अपनी विरासत को समझना और नई संभावनाओं का सुजन करना दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

मनोज सिन्हा ने अपने संदेश में कहा कि राही मासूम रजा की रचनाओं में केवल किसी एक क्षेत्र या समुदाय की कहानी नहीं मिलती, बल्कि उनमें भारत के सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक विविधता और आम लोगों की भावनाओं की व्यापक झलक दिखाई देती है। गाजीपुर और पूर्वोत्तर की मिट्टी से जुड़े रजा ने



अपने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण समाज, रिश्तों, सामाजिक बदलावों और मानवीय क्षेत्र या समुदाय की प्रभावशाली ढांचे से प्रस्तुत किया। उनके उपन्यास ‘आधा गांव’, ‘टोपी शुक्ला’ और ‘कटरा बी अर्जु’ भारतीय समाज की जटिलताओं, सामुदायिक संबंधों और बदलते परिवेश को समझने के महत्वपूर्ण साहित्यिक

माध्यम हैं। उनकी लेखनी में स्थानीय जीवन की वास्तविकता के साथ राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव का संदेश भी मिलता है। सिन्हा ने कहा कि राही मासूम रजा का साहित्य आज भी इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि वह लोगों को धर्म, जाति और क्षेत्र की सीमाओं से आगे बढ़कर ईमानियत तथा आपसी सम्मान के आधार पर समाज को देखने की प्रेरणा देता है। राही मासूम रजा का योगदान साहित्य तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने भारतीय टेलीविजन और हिंदी सिनेमा की दुनिया में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। विशेष रूप से धारावाहिक ‘महाभारत’ की पटकथा और संवाद लेखन के जरिए उन्होंने देशभर के दर्शकों के बीच गहरी छाप छोड़ी। भारतीय महाकाव्य की परिवेश को समझने के महत्वपूर्ण साहित्यिक

अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करने में उनकी लेखनी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मनोज सिन्हा ने उनके इस योगदान को याद करते हुए कहा कि साहित्य और कला समाज को जोड़ने, विचारों को व्यापक बनाने और विभिन्न समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने की क्षमता रखते हैं। राही मासूम रजा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की साझा विरासत को सामने रखा और यह संदेश दिया कि विविधता देश की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

उन्होंने कहा कि भारत की एकता केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं है। इसकी वास्तविक शक्ति संविधान के अद्वितीय, लोकतांत्रिक मूल्यों, साझा परंपराओं, सांस्कृतिक विविधता और

नागरिकों की सामूहिक आकांक्षाओं में निहित है। देश की अलग-अलग भाषाएं, रीति-रिवाज, साहित्यिक परंपराएं और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां मिलकर भारत की विशिष्ट पहचान बनाती हैं। इन विविधताओं के बावजूद लोगों के बीच संवाद स्थापित, सहयोग और भाईचारे की भावना राष्ट्र को मजबूत करती है। राही मासूम रजा जैसे साहित्यकारों की रचनाएं इसी विचार को सशक्त बनाती हैं। उनके साहित्य में समाज के विभिन्न वर्गों की भावनाओं और अनुभवों को स्थान मिलता है, जिससे पाठकों को अपने आसपास के जीवन के व्यापक दृष्टिकोण से समझने का अवसर मिलता है। सिन्हा ने युवाओं से अपील की कि वे साहित्य, इतिहास और संस्कृति से जुड़कर देश की इस साझा विरासत को समझें और सामाजिक

सद्भाव को मजबूत करने में अपना योगदान दें। उपराज्यपाल ने युवाओं की भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि आज भारत के सामने विकास और निवारक के व्यापक अवसर मौजूद हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, डिजिटल सेवाओं, उद्यमिता, शिक्षा और उद्योग जैसे क्षेत्रों में युवा अपनी प्रतिभा और मेहनत से नए मुकाम हासिल कर सकते हैं। लेकिन इस यात्रा में अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होना आवश्यक नहीं है। आधुनिक सोच और परंपरागत मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करके ही ऐसा विकास संभव है, जो समाज के सभी वर्गों के लिए लाभकारी हो। उन्होंने कहा कि युवाओं को अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नवाचार, अग्रसरता, मेहनत और समर्पण को जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। चुनौतियों को अवसर में

बदलने की क्षमता ही उन्हें आगे बढ़ने में मदद करेगी। साथ ही उन्हें यह भी समझना होगा कि विरासत का संरक्षण केवल सरकार या सांस्कृतिक संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। मनोज सिन्हा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में हो रहे विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि बीते वर्षों में बुनियादी ढांचे, डिजिटल कनेक्टिविटी, वित्तीय समावेशन, महिला सशक्तिकरण, आवास और स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सड़कों, परिवहन और संपर्क सुविधाओं के विस्तार से आर्थिक गतिविधियों को गति मिलती है, जबकि डिजिटल सेवाओं के प्रसार से नागरिकों तक सरकारी योजनाओं और सुविधाओं की पहुंच बढ़ती है।

राजकोट मंडल में दोहरीकरण कार्य के चलते 4 नवंबर तक रेल यातायात प्रभावित रहेगा

पश्चिम रेलवे के राजकोट मंडल के जामवंथली-अलियाबाड़ा रेलखंड पर दोहरीकरण कार्य के लिए, लिए जाने वाले ब्लॉक के कारण 24 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2026 तक भावनगर मंडल पर कुछ यात्री ट्रेनों का परिचालन प्रभावित रहेगा। यात्रियों की सुविधा एवं यात्रा की पूर्व योजना को ध्यान में रखते हुए प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है।

पूर्णतः रह रहने वाली ट्रेनें
निर्धारित तिथियों के अनुसार ट्रेन संख्या 19251 वेरावल-ओखा एक्सप्रेस तथा ट्रेन संख्या 19252 ओखा-वेरावल एक्सप्रेस 28 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2026 तक पूर्णतः रह रहेगी।
आंशिक रूप से रह रहने वाली ट्रेनें

ट्रेन संख्या 19209 भावनगर-ओखा एक्सप्रेस 24 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2026 तक भावनगर से राजकोट के बीच संचालित होगी। इस अवधि में राजकोट-ओखा के बीच यह ट्रेन आंशिक रूप से रह रहेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 19210 ओखा-भावनगर एक्सप्रेस 25 अक्टूबर से 4 नवंबर, 2026 तक राजकोट से भावनगर के बीच संचालित होगी। इस अवधि में ओखा-राजकोट के बीच इस ट्रेन का परिचालन रह रहेगा।

मार्ग में नियंत्रित एवं विलंब से प्रस्थान करने वाली ट्रेनें
दिनांक 28 अक्टूबर, 2026 को सिकंदराबाद से प्रस्थान करने वाली ट्रेन संख्या 20967 सिकंदराबाद-पोरबंदर

एक्सप्रेस को मार्ग में 2 घंटे 40 मिनट तक नियंत्रित (Regulate) किया जाएगा। वहीं, दिनांक 24 अक्टूबर, 2026 को ओखा से प्रस्थान करने वाली ट्रेन संख्या 19210 ओखा-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस अपने निर्धारित समय से 1 घंटा 35 मिनट की देरी से प्रस्थान करेगी। रेल प्रशासन यात्रियों से अनुरोध करता है कि वे इन परिचालन संबंधी परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए अपनी यात्रा की योजना बनाएं। ट्रेनों के परिचालन एवं समय-सारणी से संबंधित नवीनतम जानकारी के लिए यात्री भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।



गुजरात को अत्याधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की भेंट

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रिवेंशन, हेल्थ प्रमोशन और अफोर्टेबल ट्रीटमेंट की त्रिवेणी से स्वास्थ्य एवं कल्याण के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन आया है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

अहमदाबाद में 223 करोड़ रुपए की लागत से आकार लेगा अत्याधुनिक ‘इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर’: 521 बिस्तरों की क्षमता के साथ गुजरात बनेगा न्यूरोलॉजी उपचार का हब

गांधीनगर : राज्य के कोने-कोने तक गुणवत्तापूर्ण और संवेदनशील स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने के दृढ़ संकल्प के साथ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से 500 करोड़ रुपए से भी अधिक की स्वास्थ्य संबंधी विकास परियोजनाओं की बड़ी भेंट दी गई।

अहमदाबाद में आयोजित स्वास्थ्य परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सेवा और समर्पण के 25 वर्षों में देश और राज्य के स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन आया है। ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः’ की भावना को साकार करने की दिशा में आज गुजरात ने स्वास्थ्य क्षेत्र में एक और मजबूत कदम बढ़ाया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में प्रिवेंशन, हेल्थ प्रमोशन और अफोर्टेबल ट्रीटमेंट की त्रिवेणी के माध्यम से ‘होलिस्टिक हेल्थ केयर’ का दृष्टिकोण अपनाया गया है। एक समय गांधीर बीमारी के कारण परिवार आर्थिक कर्ज में डूब जाते थे, लेकिन आयुष्मान भारत योजना के तहत 10 लाख रुपए तक का निःशुल्क उपचार प्रदान करके गरीब और जरूरतमंद नागरिकों को आर्थिक सुरक्षा दी गई है। राज्य में 2.87 करोड़ से अधिक नागरिकों को आयुष्मान कार्ड प्रदान किए गए हैं। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आँकड़ों की जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष 2001-02 में केवल 8 मेडिकल कॉलेज थे, जिनकी संख्या

बढ़कर वर्ष 2025-26 में 43 हो गई है। एमबीबीएस की सीटें भी 1,375 से बढ़कर 7,525 हो गई हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र की भावी योजनाओं के बारे में बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राजकोट में एम्स कार्यरत हो चुका है और जामनगर में विश्व का पहला ‘ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन’ आकार ले रहा है। अहमदाबाद मेंडिसिटी में 223 करोड़ रुपए की लागत से इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर की आधारशिला रखी गई है, जो स्ट्रोक, ब्रेन ट्यूमर और न्यूरो संबंधी जटिल बीमारियों के लिए अत्याधुनिक उपचार और अनुसंधान उपलब्ध कराएगा।

नागरिकों को ‘हेल्थ केयर अंडर वन अम्ब्रेला’ के अंतर्गत सभी सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए अहमदाबाद की तरह अब वसई और कामरेज में भी लगभग 3,000 करोड़ रुपए की लागत से नई मेडिसिटी विकसित करने की योजना है। इसके साथ ही; गांधीनगर और सूरत में भी कार्डियोलॉजी तथा न्यूरोलॉजी सेवाओं का व्याप किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने इस संबंध में अन्य जानकारीयें भी दीं।

मुख्यमंत्री ने डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मचारियों से अपील करते हुए कहा कि केवल बीमारी का निदान और उपचार ही नहीं; बल्कि मरीज और उसके परिवार में विश्वास जगाकर उन्हें मानसिक संबल देना भी हमारा नैतिक कर्तव्य है। प्रधानमंत्री के ‘विकसित भारत @ 2047’ के सपने को साकार



करने के लिए ‘स्वस्थ गुजरात’ का निर्माण करने के लिए हम सभी मिलकर कटिबद्ध बनें।

स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल्ल पानसेरिया ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात स्वास्थ्य क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ हासिल कर रहा है। 500 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से राज्यभर में लगभग 255 स्वास्थ्य संस्थानों के लोकार्पण और शिलान्यास से सुदूरवर्ती नागरिकों तक बेहतरीन चिकित्सा सुविधाएँ पहुँचेंगी। अहमदाबाद सिविल अस्पताल परिसर में 223 करोड़ रुपए की लागत से

निर्मित होने वाला 58,000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल का, 525 बिस्तरों और 13 अत्याधुनिक ऑपरेशन थिएटरों से युक्त ‘इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर’ न्यूरो संबंधी जटिल बीमारियों के लिए संजीवनी के समान साबित होगा। उन्होंने आगे कहा कि आने वाले समय में इसी परिसर में एक सुसज्जित ‘स्प्राइन हॉस्पिटल’ की भी योजना बनाई जा रही है, जिससे गरीब और मध्यम वर्ग के मरीजों को अपने ही क्षेत्र में विश्वस्तरीय उपचार मिल सकेगा।

मंत्री ने राज्य के स्वास्थ्यकर्मियों, डॉक्टरों और आशा कार्यकर्ताओं के निष्ठापूर्ण

कायों की सराहना करते हुए कहा कि टीबी उन्मूलन, चांदीपुरा वायरस तथा मलेरिया नियंत्रण और मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी लाने के मामले में गुजरात ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। उन्होंने कहा कि अंगदान के मामले में पूरे देश में पहले स्थान पर रहने वाले गुजरात के अस्पताल और 1,400 से अधिक 108 एम्बुलेंस की निरंतर आपातकालीन सेवाएँ राज्य के प्रत्येक नागरिक के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हैं।

यह उल्लेखनीय है कि “मरीज को अपने क्षेत्र में ही समय पर निदान और

उचित उपचार मिले” के उदात्त उद्देश्य से 185 करोड़ रुपए की लागत से नवनिर्मित 255 स्वास्थ्य सुविधाओं का ई-लोकार्पण तथा 347 करोड़ रुपए की लागत से होने वाले स्वास्थ्य क्षेत्र के 45 नए विकास कार्यों का शिलान्यास किया गया। उन्होंने आगे कहा कि इस अवसर पर अहमदाबाद में 223 करोड़ रुपए की लागत से आकार लेने वाले ‘इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर’ का शिलान्यास किया गया, जो गुजरात और पड़ोसी राज्यों के मरीजों के लिए अत्याधुनिक न्यूरो उपचार की नई आशा की किरण बनेगा।

गुजरात के नागरिकों को घर के पास ही समय पर निदान, उचित उपचार और मानवीय संवेदनाओं से युक्त स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने के दृढ़ संकल्प के साथ मुख्यमंत्री द्वारा 500 करोड़ रुपए से अधिक के स्वास्थ्य संबंधी विकास कार्यों की बड़ी भेंट दी गई। इस अवसर पर 223 करोड़ रुपए की लागत से विकसित किए जाने वाले ‘इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर’ का शिलान्यास किया गया। यह संस्थान 58,831 वर्ग मीटर के निर्मित क्षेत्र में आकार लेगा और इसकी क्षमता 521 बिस्तरों की होगी। इस केन्द्र में 288

सामान्य वार्ड बेड, 160 आईसीयू बेड, 57 विशेष एवं अर्ध-विशेष बेड तथा 16 ट्रायेज बेड की सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। इस संस्थान में अंतरराष्ट्रीय मानकों के 13 ऑपरेशन थिएटर, न्यूरोलॉजी एवं न्यूरोसर्जरी, आपातकालीन रेडियोलॉजी, अत्याधुनिक प्रयोगशाला, ब्लड बैंक, सेंट्रल स्टोराइल सर्विसेज विभाग, न्यूमैटिक ट्यूब सिस्टम और इन-हाउस न्यूरो-रिहैबिलिटेशन सेंटर जैसी विश्वस्तरीय सुविधाएँ शामिल होंगी। यह केन्द्र गुजरात के साथ-साथ आसपास के राज्यों के लिए भी अत्याधुनिक न्यूरोलॉजी और न्यूरो सर्जरी उपचार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगा। स्ट्रोक, मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी की जटिल बीमारियों, दुर्घटनाओं में होने वाली न्यूरोलॉजिकल चोटों तथा दीर्घकालीन पुनर्वास के लिए यह संस्थान मरीजों और उनके परिवारों को नई आशा प्रदान करेगा। इस अवसर पर शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, महापौर श्री हितेश बारोट, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सुरजीतसिंह गोहिल, सांसद श्री दिनेश मकवाणा तथा श्री हसमुख पटेल, से अधिक के स्वास्थ्य संबंधी विकास कार्यों की बड़ी भेंट दी गई।

इस अवसर पर 223 करोड़ रुपए की लागत से विकसित किए जाने वाले ‘इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस एंड रिसर्च सेंटर’ का शिलान्यास किया गया। यह संस्थान 58,831 वर्ग मीटर के निर्मित क्षेत्र में आकार लेगा और इसकी क्षमता 521 बिस्तरों की होगी। इस केन्द्र में 288

राजकोट मंडल में दोहरीकरण कार्य के चलते 4 नवम्बर तक रेल यातायात होगा प्रभावित

पश्चिम रेलवे के राजकोट मंडल के जामवंथली-अलियाबाड़ा रेलखंड पर दोहरीकरण कार्य के लिए ब्लॉक लिया जाएगा। इस कार्य के चलते 24 अक्टूबर 2026 से 4 नवंबर 2026 तक कुछ यात्री ट्रेनों का परिचालन प्रभावित होगा। राजकोट मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री सुनील कुमार मीना के अनुसार प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

रह की गयी ट्रेनें:
निम्नलिखित ट्रेनें निर्धारित यात्रा प्रारंभ करने की तारीख के अनुसार पूर्णतः रह रहेगी:

► ट्रेन संख्या 59552, ओखा-राजकोट लोकल 24 अक्टूबर से 4 नवंबर 2026 तक रह।

► ट्रेन संख्या 59551, राजकोट-ओखा लोकल 24 अक्टूबर से 4 नवंबर 2026 तक रह।

► ट्रेन संख्या 19252, ओखा-वेरावल एक्सप्रेस 28 अक्टूबर से 4 नवंबर 2026 तक रह।

► ट्रेन संख्या 19251, वेरावल-ओखा एक्सप्रेस 28 अक्टूबर से 4 नवंबर 2026 तक रह।

आंशिक रूप से रह की गयी ट्रेनें:
► ट्रेन नं 19209 भावनगर-ओखा एक्सप्रेस को 24.10.2026 से लेकर 03.11.2026 तक भावनगर से लेकर राजकोट तक चलाया जाएगा। इस तरह यह ट्रेन राजकोट-ओखा के बीच आंशिक रूप से रह रहेगी।

► ट्रेन नं 19210 ओखा-भावनगर एक्सप्रेस को 25.10.2026 से लेकर 04.11.2026 तक राजकोट से लेकर भावनगर तक चलाया जाएगा। इस तरह यह ट्रेन ओखा-राजकोट के बीच आंशिक रूप से रह रहेगी।

► ट्रेन नं 22959 वडोदरा-जामनगर इंटरसिटी एक्सप्रेस को 28.10.2026 से लेकर 04.11.2026 तक वडोदरा से

लेकर राजकोट तक चलाया जाएगा। इस तरह यह ट्रेन राजकोट-जामनगर के बीच आंशिक रूप से रह रहेगी।

► ट्रेन नं 22960 जामनगर-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस को 29.10.2026 से लेकर 05.11.2026 तक राजकोट से लेकर वडोदरा तक चलाया जाएगा। इस तरह यह ट्रेन जामनगर-राजकोट के बीच आंशिक रूप से रह रहेगी।

रिशेड्यूल की गयी ट्रेनें:
► ट्रेन नं 22969 ओखा-बनारस एक्सप्रेस को 29.10.2026 को ओखा से अपने निर्धारित प्रस्थान समय 14.05 बजे की जगह 1 घंटा 55 मिनट देरी से यानि 16.00 बजे चलने के लिए रिशेड्यूल किया गया है।

► ट्रेन संख्या 22926 ओखा-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस 30.10.2026 को ओखा से अपने निर्धारित प्रस्थान समय 16:45 बजे की जगह 1 घंटा 30 मिनट देरी से यानि 18:15 बजे चलने के लिए रिशेड्यूल किया गया है।

► ट्रेन संख्या 22926 ओखा-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस 02.11.2026 को ओखा से अपने निर्धारित प्रस्थान समय 16:45 बजे की जगह 2 घंटे 10 मिनट देरी से यानि 18:55 बजे चलने के लिए रिशेड्यूल किया गया है।

► ट्रेन संख्या 12268 हापा-मुंबई सेंट्रल दुरंतो एक्सप्रेस 2 नवंबर 2026 को हापा से अपने निर्धारित प्रस्थान समय 20:05 बजे की जगह 1 घंटा 20 मिनट देरी से 21:25 बजे प्रस्थान करेगी।

मार्ग में रेगुलेट (लेट) होने वाली ट्रेनें:
► ट्रेन संख्या 22926, ओखा-साबरमती वंदे भारत एक्सप्रेस को 24, 25, 26, 28, 29, 31 अक्टूबर तथा 1 नवंबर 2026 को मार्ग में 45 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 25.10.2026 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से चलने वाली ट्रेन नं 12478 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-जामनगर एक्सप्रेस

को मार्ग में 1 घंटा 40 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 01.11.2026 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से चलने वाली ट्रेन नं 12478 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-जामनगर एक्सप्रेस को मार्ग में 4 घंटा 10 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 26.10.2026 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से चलने वाली ट्रेन संख्या 12476 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-हापा एक्सप्रेस को मार्ग में 1 घंटा 30 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 26.10.2026 को गुवाहाटी से चलने वाली ट्रेन नं 15636 गुवाहाटी-ओखा एक्सप्रेस को मार्ग में 55 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 30.10.2026 को ट्रेन नं 12268 हापा-मुंबई सेंट्रल दुरंतो एक्सप्रेस हापा से अपने निर्धारित समय से 35 मिनट देरी से प्रस्थान करेगी।

► 28.10.2026 को सिकंदराबाद से चलने वाली ट्रेन नं 20967 सिकंदराबाद-पोरबंदर एक्सप्रेस को मार्ग में 2 घंटा 40 मिनट रेगुलेट किया जाएगा।

► 30 अक्टूबर 2026 को जामनगर से चलने वाली ट्रेन संख्या 22924 जामनगर-बांद्रा टर्मिनस हमसफर एक्सप्रेस जामनगर से अपने निर्धारित समय से 25 मिनट विलंब से प्रस्थान करेगी।

► 24 अक्टूबर 2026 को ओखा से चलने वाली ट्रेन संख्या 19210 ओखा-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस ओखा से अपने निर्धारित समय से 1 घंटा 35 मिनट देरी से प्रस्थान करेगी।

रेल यात्रियों से निवेदन है कि वे उपरोक्त फेरबदल को ध्यान में रखकर अपनी यात्रा प्रारम्भ करें और ट्रेनों के परिचालन संबंधित नवीनतम अपडेट को जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें ताकि किसी प्रकार कि असुविधा ना हो।

पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल में रेलवे सुरक्षा बल (RPF) के सुरक्षा आयुक्त-II के पद पर कार्यरत श्री रजत कुंदगीर, इंडियन रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स सर्विस (IRPFS) को प्रधानमंत्री सिल्वर कप केस स्टडी प्रतियोगिता-2026 में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

पश्चिम रेलवे, मुंबई सेंट्रल के रेलवे सुरक्षा बल (RPF) में सुरक्षा आयुक्त-II के पद पर कार्यरत श्री रजत कुंदगीर, आईआरपीएफएस को प्रधानमंत्री सिल्वर कप केस स्टडी प्रतियोगिता-2026 में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यह पुरस्कार समारोह हैदराबाद स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में आयोजित किया गया। यह पुरस्कार श्री कुंदगीर की “पुलिसिंग में एआई/एमएल का उपयोग – चुनौतियां एवं आगे की राह” विषय पर प्रस्तुत केस स्टडी के लिए प्रदान किया गया। इसमें मुंबई सेंट्रल मंडल में रेलवे सुरक्षा की सुदृढ़ बनाने में आधुनिक तकनीक की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

अकादमी में आयोजित आईपीएस पासिंग आउट पेरेड की पूर्व संस्था पर केंद्रीय गृह सचिव श्री गोविंद मोहन ने श्री कुंदगीर को प्रधानमंत्री सिल्वर कप की प्रतिकृति, स्वर्ण पदक, प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किया।

अकादमी द्वारा प्रतियर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशों के पुलिस बलों, केंद्रीय पुलिस संगठनों तथा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के सेवारत पुलिस एवं सुरक्षा



कर्मों भाग ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य समकालीन पुलिसिंग की चुनौतियों के समाधान के लिए सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों का दस्तावेजीकरण, विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा नवोन्मेयी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना है। श्री कुंदगीर की केस स्टडी का राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभिक मूल्यांकन और मौखिक प्रस्तुति सहित कई चरणों में मूल्यांकन किया गया। निर्णायक मंडल में प्रधानमंत्री कार्यालय और खुफिया ब्यूरो के प्रतिनिधियों के साथ-साथ पत्रकार,

शिक्षाविद् और सेवानिवृत्त नौकरशाह शामिल थे। पुरस्कार विजेता केस स्टडी में मुंबई सेंट्रल मंडल में आरपीएफ द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग (MLएल), फेस रिकग्निशन सिस्टम (FRS) और सीसीटीवी निगरानी के उपयोग से किए गए कार्यों को प्रस्तुत किया गया। इस अध्ययन में 463 एफआरएस-सक्षम सीसीटीवी कैमरों के निगरानी नेटवर्क और 14,000 से अधिक आपराधिक रिकॉर्ड वाले डेटाबेस का उल्लेख किया गया, जिनकी सहायता

से संदिग्धों की समय पर पहचान करना संभव हुआ। उल्लेखनीय है कि इस केस स्टडी में एफआरएस के माध्यम से 202 से अधिक मामलों का पता लगाने तथा अंधेरी स्टेशन पर यात्रियों के सामान की चोरी (TOBP) के मामलों में 38% की कमी दर्ज किए जाने की जानकारी दी गई। ये पहल अपराध की रोकथाम के लिए सक्रिय एवं खुफिया जानकारी पर आधारित पुलिसिंग को बढ़ावा देने के साथ-साथ रेलवे स्टेशनों पर सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने में तकनीकी महत्वपूर्ण

भूमिका को दर्शाती हैं। यह सम्मान पश्चिम रेलवे और रेलवे सुरक्षा बल के लिए गवं का विषय है। पश्चिम रेलवे को श्री रजत की इस उपलब्धि पर गर्व है और वह उन्हें बधाई देता है। उनकी यह उपलब्धि अपराध की रोकथाम, निगरानी व्यवस्था में सुधार तथा यात्रियों को अधिक सुरक्षित यात्रा वातावरण उपलब्ध कराने के लिए आधुनिक तकनीक के उपयोग में रेलवे सुरक्षा बल के कर्मियों के प्रयासों को प्रदर्शित करती है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने खीजडिया एवं अमरेली सेक्शन में ब्रॉड गेज निर्माण कार्यों का किया विस्तृत संरक्षा निरीक्षण,निर्माण कार्यों की प्रगति, रेल संरक्षा एवं यात्री सुविधाओं की व्यवस्थाओं का लिया जायजा

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने 23 अक्टूबर 2026 को खीजडिया एवं अमरेली सेक्शन में ब्रॉड गेज (BG) निर्माण कार्यों का विस्तृत संरक्षा निरीक्षण किया। इस निरीक्षण का उद्देश्य निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने के साथ-साथ रेल संरक्षा, निर्माण गुणवत्ता एवं यात्री सुविधाओं से संबंधित व्यवस्थाओं का जायजा लेना था।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने रेलखंड में चल रहे विभिन्न निर्माण कार्यों की प्रगति का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने रेलवे अंडर ब्रिज (RUB), पुलों, समपार फाटकों (लेवल क्रॉसिंग गेट्स), कर्व, इंटरलॉकिंग प्रणाली एवं पॉइंट्स का निरीक्षण कर संबंधित कार्यों की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान रेल संरक्षा से जुड़े विभिन्न तकनीकी पहलुओं तथा निर्माण



कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया। इस अवसर पर संबंधित अधिकारियों से निर्माण कार्यों की प्रगति एवं तकनीकी व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी भी ली गई। इसके अतिरिक्त, मंडल रेल प्रबंधक ने अमरेली रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को

उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने स्टेशन पर उपलब्ध सुविधाओं एवं संबंधित व्यवस्थाओं का जायजा लेकर यात्री सुविधाओं के समुचित रखरखाव एवं बेहतर प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया। पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल रेल

संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए आधारभूत संरचना के विकास, निर्माण कार्यों की गुणवत्ता तथा यात्री सुविधाओं के निरंतर उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध है। इस संरक्षा निरीक्षण के दौरान मंडल के वरिष्ठ शाखाधिकारी एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

गांधीनगर, 24 अक्टूबर : गुजरात के पर्यटन क्षेत्र की विकास यात्रा का सबसे प्रभावशाली प्रतीक है राज्य के नर्मदा जिले में एकतानगर स्थित विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा ‘स्टैच्यू ऑफ यूनिटी’, जिसका लोकार्पण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर, 2018 को किया था। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के आसपास के परिसर में सभी आयु वर्गों के पर्यटकों को आकर्षित करने वाले अनेक पर्यटन आकर्षण विकसित किए गए हैं और अब एकतानगर आने वाले पर्यटकों को रिवर टूरिज्म का विशेष अनुभव प्रदान करवाने के उद्देश्य से सरदार सरोवर बांध के निचले हिस्से में नर्मदा नदी पर विशेष उद्देश्य वाले सुविधायुक्त ‘एकता कूज’ का निर्माण किया गया है। 16 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित यह कूज आधुनिक सेफ्टी सिस्टम, संगीत की सुविधाओं, आरामदायक बैठक व्यवस्था तथा कैटरिंग व डाइनिंग की सुविधाओं से सज्ज है। इस कूज में विभिन्न कार्यक्रमों, उत्सवों,



समारोहों और मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन किया जा सकेगा।

नए एकता कूज की विशेषताएँ

- 600 यात्रियों के बैठने की क्षमता।
- लगभग 360 वर्ग मीटर क्षेत्रफल।
- संचालन के लिए 400 हॉस्पिटर (एचपी) का इंजन।
- कूज में बिजली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चार डीजल

जनरेटर सेट।

- घोषणाओं-उद्घोषणाओं, मनोरंजन और विभिन्न कार्यक्रमों के लिए लाइव म्यूजिक सिस्टम।
- अग्नि सुरक्षा और अन्य सुरक्षा व्यवस्थाएँ।
- यात्रियों के लिए आरामदायक बैठक व्यवस्था।
- भोजन एवं अल्पाहार परसेप्न के लिए